• बाल कविताएं...

अन्नू का तोता...

'बाबा, बाबा' बोला पोता,
'लाल, दुलारे तू क्यों रोता?'
'ला दो पिंजला, ला दो तोता
बला नहीं, बछ छोता-छोता।'
अन्नू जी ने गाना छोड़ा,
अन्नू जी ने खाना छोड़ा,
बाबा साहब से की कुट्टी
दादा से भी हो गई छुट्टी।
अन्नू जी का तोता आया
पिंजड़े में उसको बैठाया,
तनिक न तोते के मन भाया
पानी पिया, न दाना खाया!
'सीता-राम' न पट्ठू बोले
बंद न अपनी आंखें खोले,
चुमकारें या उसे चहेंटे-
चीख-चीखकर बोले 'टें-टें।'
अन्नू ने छोड़ी शैतानी
उसको हुई बड़ी हैरानी,
पानी पिए न दाना खाए
'राम' न बोले, बस चिल्लाए!
'कौन, कहां, तोते के पापा?
दद्दा होंगे इसके बाबा।'
'लाल दुलारे, वे हैं वन में,
इसीलिए दुख इसके मन में।'
अब न करूंगा मैं मनमानी
अन्नू की आँखों में पानी,
पिंजड़ा खोला, बोले, 'आ-आ,
बहुत सताया तुझको जा-जा।'

■ संत कुमार टंडन 'रसिक'

• चुटकुले...

पहला दोस्त – क्या कर रहे हो भाई?
दूसरा दोस्त – खा रहा हूं भाई...!
पहला दोस्त – अकेले– अकेले...?
दूसरा दोस्त – अबे बीवी से ताने खा रहा हूं, आजा तू भी खा ले...!!!

एक औरत ने पंडित जी से घर की खुशहाली का उपाय पूछा
पंडित जी... बेटी पहली रोटी गाय को खिलाया करो और आखिरी रोटी कुत्ते को।
औरत... पंडित जी मैं ऐसा ही करती हूं।
पहली रोटी खुद खाती हूं।
आखिरी रोटी अपने पति को खिलाती हूं।
पंडित बेहोश!!

• जानकारी...

समझदार पक्षी

दुनियाभर में लाखों प्रजाति के जानवर पाए जाते हैं। इनमें खासकर पक्षियों को इंसान सबसे अधिक पसंद करता है। क्योंकि अधिकांश पक्षी कोमल, रंग और बोली की वजह से आकर्षित लगते हैं। लेकिन आपने देखा होगा कि कबूतर का इस्तेमाल सबसे अधिक संदेश वाहक के

लिए किया जाता था। आज भी जासूसी के लिए लोग कबूतर का इस्तेमाल करते हैं। ऐसे में सवाल ये है कि आखिर कबूतर कितना समझदार होता है कि वो रास्तों को याद करके सही इंसान तक संदेश पहुंचा देता है।

इंटरनेट आने के बाद एक सेकंड से भी कम समय में आप दूर किसी देश में अपना संदेश भेज सकते हैं। आज के समय किसी को संदेश भेजना बेहद ही आसान है। लेकिन प्राचीन समय में संदेश भेजने में काफी समय लग जाता है।

कई बार इनमें सालभर से अधिक का समय भी लग जाता था। पहले पत्र को लिखना और फिर उसे पैदल जाकर हाथों से पहुंचाना शायद संचार का सबसे बुनियादी और लंबे समय तक चलने वाला साधन था। हालांकि ऐसे में संदेश को एक जगह से दूसरी जगह पर पहुंचाने में काफी समय बर्बाद होता था। कई बार लोगों को महीनों बाद अपने परिजनों के संदेश मिला करते थे।

बता दें कि घोड़े की पीठ पर या पैदल संदेश पहुंचाना संतोषजनक तो था, लेकिन इसमें कई तरह की परेशानियां भी सामने आती थी। जैसे बेईमान संदेशवाहक, दुर्घटनाएं, संदेशों का नुकसान, अप्रत्याशित देरी और गारंटीकृत गोपनीयता की भी कमी थी। इस कारण बहुत से लोग संदेश भेजने के लिए मानवीय तत्वों को पूरी तरह से हटा देना चाहते थे। प्राचीन इतिहास से पता चलता है कि पिछली पीढ़ियों में अपने संदेश को लंबी दूरी तक कम समय में पहुंचाने के लिए लोग घरेलू कबूतरों का इस्तेमाल करते थे। लेकिन सवाल ये है कि ऐसा क्या कारण था कि पत्रों को भेजने के लिए कबूतरों का ही इस्तमाले किया जाता था।

कबूतरों के पैटर्न और चाल का अध्ययन करते समय यह देखा गया कि उनके पास दिशाओं को याद रखने की एक अद्भुत समझ होती है। मीलों तक हर दिशा में उड़ने के बाद भी वे अपने घोंसले का मार्गदर्शन करने में सक्षम होते हैं। दरअसल कबूतर उन पक्षियों में से आते हैं, जिनमें रास्तों को याद रखने की खूबी होती है।

एक कहावत भी है कि कबूतरों के शरीर में एक तरह से जीपीएस सिस्टम होता है, जिस कारण वह कभी भी रास्ता नहीं भूलते हैं। कबूतरों में रास्तों को खोजने के लिए मैग्नेटोरिसेप्शन स्किल पाई जाती है। यह एक तरह से कबूतरों में गुण होता है। इन सब खूबियों के अलावा कबूतर के दिमाग में पाए जाने वाली 53 कोशिकाओं के एक समूह की पहचान भी की गई है, जिनकी मदद से वे दिशा की पहचान और पृथ्वी के चुंबकीय क्षेत्र का निर्धारण करने में सक्षम होते हैं। इसके अलावा कबूतरों की आंखों के रेटिना में क्रिप्टोक्रोम नाम का प्रोटीन पाया जाता है, जिससे वह जल्द रास्ता ढूंढ लेते है। इसीलिए उन्हें संदेशवाहक कहते थे।

• गोनू झा

कंजूस राजा को नसीहत

गतांक से आगे...

नए राजा को जब सूचना मिली कि गोनू झा आए हैं तो उसने ससम्मान दरबार में बुलाने का निर्देश दिया। नए राजा को गोनू झा के बारे में इतना तो पता ही था कि उसके पिता गोनू झा को प्रायः बुलाया करते थे। गोनू झा की विद्वता और विनोदप्रियता की चर्चा भी उसने सुन रखी थी, लेकिन उनके साथ अंग देश के विद्वत्जनों को आते देख उसकी पेशानियों पर बल पड़ गए, मगर उसने कुछ कहा नहीं। गोनू झा के अभिवादन के लिए नया राजा सिंहासन से उतरकर खड़ा हो गया। गोनू झा ने उसे नमस्कार करने के लिए अपने हाथ जोड़े तब उनके साथ आए अंग देश के विद्वत्जनों ने भी अपने हाथ जोड़े और फिर गोनू झा ने अपने हाथ फैलाकर मुँह खोल लिया और उसी मुद्रा में मूर्तिवत् खड़े हो गए। उनके साथ दरबार में उपस्थित विद्वत्जनों ने भी ऐसा ही किया। गोनू झा सहित इतने सारे लोगों को हाथ फैलाए और मुँह बाये खड़े देखकर नया राजा कुछ समझ नहीं पाया । दरबारी भी इस कौतुक को विस्मय से देख रहे थे।

काफी देर तक नया राजा उन्हें चकित-सा देखता रहा फिर उसके सब्र का बाँध टूट गया । उसने विस्मित भाव से पूछा -'क्या आप लोग मेरे राज्याभिषेक पर प्रसन्नता व्यक्त कर रहे हैं?'

गोनू झा ने केवल एक हाथ की अंगुलियों को एक बार नचाया फिर पूर्व की भाँति ही मूर्तिवत् हो गए। उनके साथ आए लोगों ने भी वैसा ही किया। दरबारी चकित थे और नया राजा कुछ भी समझ नहीं पा रहा था।

काफी देर तक नया राजा उन्हें चकित-सा देखता रहा फिर उसके सब्र का बाँध टूट गया । उसने विस्मित भाव से पूछा – 'क्या आप लोग मेरे राज्याभिषेक पर प्रसन्नता व्यक्त कर रहे हैं?'

गोनू झा ने केवल एक हाथ की अंगुलियों को एक बार नचाया फिर पूर्व की भाँति ही मूर्तिवत् हो गए। उनके साथ आए लोगों ने भी वैसा ही किया। दरबारी चकित थे और नया राजा कुछ भी समझ नहीं पा रहा था...

उसने फिर गोनू झा से पूछा- 'क्या आप लोग वृद्ध महाराज के आरोग्य लाभ की कामना प्रकट कर रहे हैं?'

गोनू झा ने पूर्व की भाँति ही एक हाथ की अँगुलियों को नचाया और मुँह बाए अपनी पूर्व की मुद्रा में आ गए।

इस तरह की विचित्र स्थिति की कल्पना न नए राजा ने कभी की थी और न उसके दरबारियों ने। अन्ततः नए राजा ने महामंत्री से धीरे से पूछा कि वह क्या करे?

महामंत्री भी उलझन में थे कि पता नहीं गोनू झा क्या कहना चाह रहे हैं। फिर उन्होंने गोनू झा के साथ आए लोगों को देखा तो पाया कि ये लोग वृद्ध महाराज के राज में दरबार में विशेष सम्मान के अधिकारी थे। इनमें चारण और ब्राह्मण भी थे जिन्हें नये राजा ने कोई तरजीह नहीं दी थी।

महामंत्री ने नए राजा से अपने अनुमान के आधार पर कहा -'राजन सम्भवतः ये लोग आपसे कुछ दान-दक्षिणा की प्रत्याशा रखते प्रतीत होते हैं। इन्हें कुछ उपहार प्रदान करें और यथायोग्य आसन प्रदान करें तो सम्भवतः गोनू झा के यहाँ पधारने का प्रयोजन स्पष्ट हो पाए।

नये राजा ने ऐसा ही किया। मिथिला से आए गोनू झा जैसे विद्वान ब्राह्मण का आदर करना नए राजा ने राजनीतिक आवश्यकता के रूप में लिया तथा उनके साथ आए लोगों को भी उसने इसी दृष्टि से सम्मानित किया।

उचित आसन एवं उपहार मिलने के बाद गोनू झा ने सहज मुद्रा अपना ली। उनके साथ आए लोगों ने भी ऐसा ही किया। फिर गोनू झा ने नए राजा से कहा -'राजन! मैं यहाँ आपके पिता के दर्शन के लिए उपस्थित हुआ हूँ। मेरे साथ जो लोग हैं, वे आपके राज्य की विभूतियाँ हैं। इनके मुँह से अमृत वचन निकला करते थे। उस सिंहासन पर जहाँ आज आप विराजमान हैं, वहाँ वृद्ध महाराज विराजमान हुआ करते थे।

-जारी

• रोचक...

सबसे पहले सूर्यास्त

भारत में सबसे पहले सूर्यास्त का अनुभव अंडमान और निकोबार द्वीपसमूह में होता है। अंडमान और निकोबार द्वीपसमूह भारतीय उपमहाद्वीप के पूर्वी सिरे पर स्थित हैं और ये बंगाल की खाड़ी में फैले हुआ है। यहां के द्वीपों की भौगोलिक स्थिति के कारण, सूर्य की किरणें भारतीय उपमहाद्वीप के बाकी हिस्सों की तुलना में पहले इन द्वीपसमूह पर पहुचती हैं। अंडमान और निकोबार द्वीपसमूह का स्थान भारतीय उपमहाद्वीप के दक्षिण–पूर्व में है और यह समुद्र के ऊपर फैला हुआ है। इन द्वीपों की स्थिति भारत की मुख्यभूमि से काफी दूर है, जिससे सूर्य की किरणें यहां सबसे पहले पहुंचती हैं। भारत के अन्य हिस्सों की तुलना में, अंडमान और निकोबार द्वीपसमूह में सूर्यास्त का समय काफी पहले होता है। इसका मतलब है कि यहां सूरज जल्दी अस्त होता है और दिन भी जल्दी समाप्त होता है।

• राष्ट्रीय पक्षी...

भारत के पड़ोसी देश श्रीलंका का राष्ट्रीय पक्षी श्रीलंकाई जंगल फाउल यानि जंगलमुर्गी है। ये मुर्गी दिखने में बाकी आम मुर्गियों की तरह ही है। हले इसे सीलोन जंगलफाउल कहा जाता था। यह पक्षी केवल श्रीलंका के विभिन्न वन क्षेत्रों में पाया जाता है। यह मुर्गे की एक प्रजाति है। जंगली मुर्गे सर्वाहारी यानि शाकाहारी और मांसाहारी दोनों होते हैं। जंगली मुर्गे की लंबाई लगभग 35 सेमी और वजन 510–645 ग्राम होता है।